International Journal of Social Science and Education Research
www.socialsciencejournals.net
Online ISSN: 2664-9853, Print ISSN: 2664-9845
Received: 10-01-2022, Accepted: 25-01-2022, Published: 10-02-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 10-13

माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

साधना अग्रवाल[1], ममता बाकलीबाल[2]
[1] सहायक प्राध्यापक, राजीव गाँधी महाविद्यालय, भोपाल मध्य प्रदेश, भारत
[2] शिक्षा संकाय, राजीव गाँधी महाविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन भोपाल जिले के सन्दर्भ में करना है। इसके लिए शिक्षक कार्यमूल्य मापनी डॉक्टर करुणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं एवं ग्रामीण क्षेत्र की शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय तथा शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।

मूल शब्दः शासकीय एवं अशासकीय, अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों, तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना
मूल्य शब्द से अभिप्राय भावनात्मक दृष्टि से मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति करना है । समाज समूह में जो घटना घटित होती है समाज उसका उचित अथवा अनुचित रूप से मूल्यांकन करता है । इसी के आधार पर समाज में घटित घटनाओं को सही या गलत, उचित या अनुचित ठहराया जाता है और ये ही मूल्य कहलाते हैं । विभिन्न मूल्यों को सीखने के लिए शैक्षणिक संस्थान एक शक्तिशाली स्त्रोत है। अध्यापक से कार्य के प्रति कर्त्तव्य एवं व्यावसायिक संतुष्टि की आशा की जाती है एवं उसका आदर किया जाता है। अध्यापक कार्य के विभिन्न पहलुओं से भावनात्मक रूप से सम्बंधित रहते हैं । कार्य के विभिन्न भावनात्मक पहलूओं को ही कार्य मूल्य कहा जाता है । व्यक्ति जिस वातावरण में कार्य करता है, वहां उसके कार्य करने का ढंग यानि की कार्यशैली को प्रभावित करने वाले मूल्य, कार्यमूल्य कहलाते हैं । कार्यमूल्य एक विचारधारा अथवा विश्वास है जो यह बताता है की हम कैसे अपनी जिंदगी जीते हैं । कार्यमूल्यों की महत्ता शिक्षा में बहुत आवश्यक है । कार्यमूल्यों की आवश्यकता व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र तीनो को है । व्यक्ति जीवन, सामाजिक जीवन तथा राष्ट्रीय जीवन मूल्यों पर आधारित होता है और मूल्य उन्हें नियंत्रित और निर्देशित करते हैं । कार्यमूल्य का सम्बन्ध जीवन के विभिन्न पक्षों से होता है । कार्यमूल्यों के आचरण से व्यक्ति को संतोष मिलता है । जिससे व्यक्ति जीवन के उच्च आदर्शों एवं भूमिकाओं की ओर आकर्षित होता है । बिना कार्यमूल्य के व्यक्ति का जीवन पशु सामान होता है । कार्यमूल्यों के आचरण से संस्कृति का विकास होता है और उसकी पहचान होती है । येनागी (2009) ने कार्यमूल्य एवं व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन हेतु कर्नाटक के हुगली एवं धारवाड़ के महाविद्यालयों में से 100 महिला शिक्षकों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चुना तथा निष्कर्ष में प्रबंधन के साथ सम्बन्ध, कार्य वातावरण, विभिन्नता, सहयोगी, प्रबंधन, आर्थिक लाभ, उपलब्धि, सुरक्षा मूल्यों एवं व्यावसायिक संतुष्टि में महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक सम्बन्ध पाया अर्थात् व्यावसायिक संतुष्टि के लिये इन मूल्यों को पर्याप्त पोषण दिया जाना चाहिये। बाकलीवाल (2007) ने माध्यमिक स्तर पर छात्राओं के कार्यमूल्यों का अध्ययन हेतु भोपाल जिले के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के 394 छात्राओं को न्यादर्श के रुप में यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया एवं निष्कर्ष में पाया कि विभिन्न परिवेश की छात्राओं के कार्यमूल्य में सार्थक अन्तर होता है । खातून (1990) ने अध्यापकों के कक्षा में निर्देशात्मक व्यवहार तथा उनके कार्यमूल्यों के प्रति दृष्टिकोंण का अध्ययन हेतु 150 शिक्षकों का चयन किया एवं निष्कर्ष में पाया कि उच्च स्तर ज्यादा तथा सकारात्मक रुप से उत्प्रेरणा तथा मूक व्यवहार से जुड़े थे तथा व्याख्या के साथ नकारात्मक रुप से जुड़े पाये गये।

उद्देश्य
1. ग्रामीण / शहरी परिवेश के शासकीय / अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं में कार्यमूल्य का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण परिवेश के शासकीय /अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं में कार्यमूल्य का अध्ययन करना।
3. शहरी परिवेश के शासकीय /अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं में कार्यमूल्य का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं
1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालय में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर नहीं है।

2. शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालय में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर नहीं है।
3. शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालय में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर नहीं है।
4. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालय में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमाएं

शोधकार्य मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत 400 अध्यापिकाओं तक सीमित है।

अनुसंधान विधि

अनुसन्धानात्मक प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए 400 अध्यापिकाओं को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है।

अध्ययन उपकरण

शिक्षक कार्यमूल्य मापनी – डा– करुणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित है।

परिकल्पना 1

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालय में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का टी–मान

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रमाप विभ्रंम	परिकलित टी– मान	टी–सारणी मान	सार्थकता .05 स्तर
कार्यमूल्य	शहरी क्षेत्र की अध्यापिकाएँ	200	380.93	52.10	4.99	.173	1.97	असार्थक
	ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाएँ	200	381.79	47.58				

तालिका 1 अवलोकन से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की अध्यापिकाओं की कार्यमूल्यों का मध्यमान क्रमशः 360–93 एवं 361–79 है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं की कार्यमूल्यों का मध्यमान शहरी क्षेत्र की अध्यापिकाओं की अपेक्षा अधिक है। तालिका से स्पष्ट है कि परिकलित टी–मान –173 है जबकि स्वतंत्रता के अंश=398 के लिए –05 सार्थकता स्तर पर टी का सारणीमान 1–97 है। इस प्रकार परिकलित मान कम है सारणीमान से अर्थात् (–173 कम है 1–97 से) अतः असार्थक अन्तर है। अतः कह सकते हैं कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं होता है । इस प्रकार परिकल्पना 1 सत्य है एवं स्वीकृत होती है।

परिकल्पना 2

शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालय में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2: माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का टी– मान

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रमाप विभ्रंम	परिकलित टी– मान	टी– सारणीमान	सार्थकता .05 स्तर
कार्यमूल्य	शासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाएँ	200	355.80	53.92	4.95	2.24	1.97	सार्थक
	अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाएँ	200	366.92	44.80				

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का मध्यमान क्रमशः 355–80 एवं 366–92 है। इस प्रकार अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का मध्यमान शासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं की अपेक्षा अधिक है। तालिका से स्पष्ट है कि परिकलित टी मान 2–24 है जबकि स्वतंत्रता के अंश = 398 के लिए –05 सार्थकता स्तर पर टी का सारणीमान 1–97 है। इस प्रकार परिकलित मान सारणीमान से अधिक है अर्थात् (1–97 कम है 2–24 से) अतः सार्थक अन्तर है। अतः कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर होता है । इस प्रकार परिकल्पना 2 असत्य है एवं अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 3

शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालय में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 3: शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का टी– मान

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रमाप विभ्रंम	परिकलित टी– मान	टी– सारणीमान	सार्थकता .05 स्तर
कार्यमूल्य	शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाएँ	100	351.09	56.14	7.25	2.71	1.97	सार्थक
	शहरी क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाएँ	100	370.77	45.92				

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का मध्यमान क्रमशः 351–09 एवं 370–77 है। इस प्रकार शहरी क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का मध्यमान शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं की अपेक्षा अधिक है। तालिका से स्पष्ट है कि परिकलित टी मान 2–71 है जबकि स्वतंत्रता के अंश = 198 के लिए –05 स्तर सार्थकता परीक्षण के लिए टी का सारणीमान 1–97 है। इस प्रकार परिकलित मान अधिक है सारणीमान से अर्थात् (1–97 कम है 2–71 से) अतः सार्थक अन्तर है। अतः कह सकते है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर होता है । इस प्रकार परिकल्पना क्र–3 असत्य है एवं अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 4

ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालय में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 4: ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का टी– मान –

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रमाप विभ्रंम	परिकलित टी– मान	टी–सारणी मान	सार्थकता .05 स्तर
कार्यमूल्य	ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाएँ	100	360.52	51.46	6.74	.378	1.97	असार्थक
	ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाएँ	100	363.07	43.55				

तालिका क्र– 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का मध्यमान क्रमशः 360–52 एवं 363–07 है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं की अपेक्षा अधिक है। तालिका से स्पष्ट है कि परिकलित टी मान –378 है जबकि स्वतंत्रता के अंश = 198 के लिए –05 स्तर सार्थकता परीक्षण के लिए टी का सारणीमान 1–97 है इस प्रकार परिकलित मान कम है सारणीमान से अर्थात् (–378 कम है 1–97 से) अतः सार्थक नही अन्तर है। अतः कह सकते है कि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं होता है इस प्रकार परिकल्पना क्र– 4 सत्य है एवं स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या

परिकल्पना क्र– 1 के निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अर्थात कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं में शिक्षण के प्रति समर्पण भाव, शिक्षण की समस्याओं पर चिन्तन एवं शिक्षण व्यवसाय में विविधता लाने के दृष्टिकोण में समानता होती है। शिक्षण व्यवसाय की प्राथमिकता एवं रूचि में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र का वातावरण एवं परिस्थितियाँ भिन्नता उत्पन्न नहीं करते हैं। परिकल्पना क्र 2 के निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया । उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के व्यवहार एवं अनुभव में समानता नहीं होती जो कि उनके कार्यमूल्य अर्थात् शिक्षण व्यवसाय से संबंधित क्रियाओं में अन्तर से प्रदर्शित होता है। इसका कारण शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के आर्थिक एवं शैक्षिक स्वरूप में भिन्नता हो सकती है। अतः शासकीय विद्यालयों में शैक्षिक क्रियाओं की सुविधाऐं प्रदान की जानी चाहिए। परिकल्पना क्र 3 के निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्य मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया। इस प्रकार उपरोक्त परिणाम से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के शिक्षण से संबंधित क्रियायें, शिक्षण कौशल को सीखने की प्रवृति एवं लक्ष्य के प्रति व्यवहार में समानता नहीं होती है। वस्तुतः इसका कारण सुविधाऐं, वेतन में अन्तर तथा अध्यापकों द्वारा अन्य व्यवसाय से तुलना हो सकता है। अतः प्रस्तुत परिणाम के आधार पर शिक्षा नीतियों पर विचार किया जाना आवश्यक है।

परिकल्पना क्र 4 के निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाऐं शिक्षण व्यवसाय के प्रति रुचि लेती हैं। अतः यह रुचि अध्यापिकाओं में उच्च आदर्शों व आचरणों के विकास में सहायक हो सकती है।

सुझाव

1. अध्यापिकाओं को स्वयं में शिक्षण के प्रति समर्पण के भाव विकसित करना चाहिए एवं एक समर्पित अध्यापक के रूप मे अपनी पहचान बनानी चाहिए।
2. अध्यापिकाओं को शिक्षण में विविधिता एवं सृजानात्मकता लाने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए।
3. शिक्षण सम्बन्धी, पाठ्यक्रम संबंधी, कक्षा व्यवस्था एवं मूल्यांकन पद्धति आदि शैक्षिक समस्याओं पर चिन्तन करना एवं निवारण हेतु प्रयासरत रहना चाहिए।
4. विद्यालय प्रबंधन द्वारा अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों, नैतिकता के विकास एवं व्यक्तित्व के विकास हेतु सकारात्मक एवं निरन्तर प्रयास किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. खातून, ताहिरा (1990)(अध्यापकों के कक्षा में निर्देशात्मक व्यवहार तथा उनका कार्यमूल्यों के प्रति दृष्टिकोण, इंडियन एजुकेशनल रिव्यु, वो– 25 (1), पृ– क्र– 129 – 34
2. बाकलीवाल, ममता (2007)(माध्यमिक स्तर पर छात्राओं के कार्यमूल्यों का अधययन, मिरेकल ऑफ टीचिंग, वो– (8), पृ– क्र– 149
3. येनागी, व्ही ज्ञान (2009)(कार्यमूल्य एवं व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन, कर्णाटक जनरल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस वो– 22(5) : 1143 – 44